सामाजिक विज्ञान में वस्तुनिष्ठता

DR. SANTOSH KUMARI

ASSOCIATE PROFESSOR AND HEAD

DEPARTMENT OF SOCIOLOGY

J.K.P. P.G. COLLEGE MUZAFFARNAGAR

परिचय

प्रत्येक विज्ञान का, चाहे वह प्राकृतिक विज्ञान हो या सामाजिक विज्ञान, प्रमुख उद्देश्य यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति है, वास्तविकता का पता लगाना है, सत्य तक पहुंचना है। इसके लिए आवश्यक है की तथ्यों का उसी रूप में पता लगाया जाए जिस रूप में वह वास्तव में है। कोई घटना जिस रूप में घटित होती है ठीक उसी रूप में उसे ग्रहण करना की वस्तुनिष्ठ अध्ययन है।

मैक्स वेबर का कहना है कि यदि समाजशास्त्र को विज्ञान के रूप में प्रतिष्ठित करना है तो हमें प्राकृतिक विज्ञानों के समान सामाजिक विज्ञानों में वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण अपनाकर आगे बढ़ना होगा। इस हेतु तठस्थ दृष्टिकोण अपनाना पड़ेगा, व्यक्तिगत विचारों, अभिवृत्तियों, धारणाओं, पूर्वाग्रहों, मूल्यो, आदि से पूर्णतः मुक्त होना पड़ेगा ऐसा करने पर ही हम सामाजिक घटनाओं का उनके वास्तविक या यथार्थ रूप में अध्ययन कर सकेंगे।

वस्तुनिष्ठता का अर्थ

- तथ्यों को उनके वास्तविक रूप में अवलोकन संकलन एवं विश्लेषण ही वस्तुनिष्ठता है। सामाजिक घटना को यथार्थ रूप में देखना और उसी रूप में व्यक्त कर देना ही वस्तुनिष्ठता है। तात्पर्य यह है कि जहां अध्ययनर्कता स्वयं के विचारों भावनाओं, अभिवृत्तियों, मूल्यो, पूर्वाग्रहों आदि से मुक्त रहकर घटनाओं का सूक्ष्म अवलोकन करता है तथ्य संकलित करता है और उनके आधार पर निष्कर्ष निकालता है तो हम कह सकते हैं कि अध्ययन में वस्तुनिष्ठता है। वस्तुनिष्ठता सत्य की खोज से संबंधित है और घटनाओं को उनके वास्तविक रूप में प्रकट करना ही वस्तुनिष्ठता है।
- प्रोफेसर ग्रीन के अनुसार, “प्रमाणों या तथ्यों का निष्पक्ष रुप से परीक्षण करने की इच्छा और योग्यता वस्तुनिष्ठता है।”
- लावेल जे. कार ने लिखा है, “वस्तुनिष्ठता का अर्थ है कि विभिन्न प्रकार की घटनाओं से युक्त संसार किसी व्यक्ति के विश्वासो, आशाओं अथवा भयों से स्वतंत्र एक वास्तविकता है जिसका सब कुछ हम अंत दृष्टि एवं कल्पना से नहीं बल्कि वास्तविक अवलोकन के द्वारा ही समझ सकते हैं।”

- फेयरचाइल्ड के अनुसार, “वस्तुनिष्ठता का तात्पर्य एक ऐसी योग्यता से है जिसके द्वारा अध्ययनकर्ता या अनुसंधानकर्ता अपने को उन स्थितियों से अलग रख सके जिनका वह स्वयं एक भाग है एवं किसी भी प्रकार की प्रतिबद्धता या भावना के बजाय निष्पक्ष एवं पूर्वाग्रहों से स्वतंत्र होकर तर्कों के आधार पर विभिन्न तथ्यों को उनके स्वाभाविक रूप में अवलोकित कर सके।”
- उपर्युक्त परिभाषाएं के आधार पर हम कह सकते हैं कि **निष्पक्ष रहकर घटनाओं को उनके यथार्थ रूप में देखना और ठीक उसी रूप में उनका चित्रण कर देना ही वस्तुनिष्ठता है**। अध्ययनकर्ता को पक्षपात रहित दृष्टिकोण, यथार्थ अवलोकन एवं तथ्यों का उनके स्वाभाविक रूप में विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण वस्तुनिष्ठता के मूल आधार है।

वस्तुनिष्ठता का महत्व

अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य प्रमाणिक निष्कर्षों अर्थात ज्ञान की प्राप्ति है। यह उसी समय संभव है जब अध्ययन पूर्णत: वैषयिक या वस्तुनिष्ठ हो। यदि निष्पक्ष रूप से अवलोकन नहीं किया गया है तथ्यों का संकलन सही रूप में नहीं किया गया है, यदि उन तथ्यों के विश्लेषण में कहीं भी व्यक्तिगत अभिनति या पक्षपात आ गया है तो ऐसी स्थिति में जो निष्कर्ष निकाले जाएंगे, वह वैज्ञानिक, प्रामाणिक या वस्तुनिष्ठ नहीं हो सकते। जब निष्कर्षों में वस्तुनिष्ठता का अभाव होगा तो यथार्थ ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकेगा सत्य तक नहीं पहुंचा जा सकेगा। अत: घटनाओं की सत्यता का पता लगाने के लिए अध्ययनों में, विशेषकर सामाजिक अनुसंधान में वस्तुनिष्ठता का होना अत्यंत आवश्यक है।

वस्तुनिष्ठता का महत्व एवं वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता निम्नलिखित विवेचना से अपने आप ही सपष्ट हो जाएगी:

1. **समाजशास्त्रीय** अध्ययनों **को वैज्ञानिक बनाते हेतु** – सामाजिक घटनाओं के अध्ययन में वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण अपनाना कठिन है क्योंकि अध्ययनकर्ता के व्यक्तिगत विचार, पूर्वाग्रह, अभिवृत्तिया एवं पसंद नापसंद अध्ययन की यथार्थता या वैज्ञानिकता को समाप्त कर देते हैं। लेकिन यदि अनुसंधानकर्ता में वस्तुनिष्ठता बनाए रखने का संकल्प हो तो सामाजिक घटनाओं का वस्तुनिष्ठ तरीके से अध्ययन किया जा सकता है। यदि अध्ययन में तठस्थ भाव को बनाये रखते हुए घटनाओं का सही चित्रण किया जाये तो किसी भी अध्ययन को वैज्ञानिक बनाया जा सकता है।

2. **वैज्ञानिक पद्धति के सफल प्रयोग हेतु** – सत्य तक पहुंचने के लिए वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग आवश्यक है। वैज्ञानिक पद्धति में सामाजिक घटनाओं का अवलोकन, वर्गीकरण, विश्लेषण तथा सत्यापन आता है, परंतु यदि इनमें से किसी भी स्तर पर वस्तुनिष्ठता की कमी है तो वैज्ञानिक निष्कर्ष नहीं निकाले जा सकते, अध्ययन में वैज्ञानिक पद्धति के सफल प्रयोग के लिए वस्तुनिष्ठता अत्यंत आवश्यक है।

3. **प्रतिनिधित्व पूर्ण तथ्यों को प्राप्त करने हेतु** - सामाजिक घटनाओं के संबंध में प्रतिनिधि तथ्य प्राप्त करने के लिए निदर्शन प्रणाली की सहायता से अध्ययन हेतु इकाइयों का चुनाव किया जाता है। ऐसे तथ्यों का संकलन किया जाना चाहिए जो समग्र की सभी विशेषताओं का पूरी तरह प्रतिनिधित्व करते हो।

4. **तथ्यों के सत्यापन हेतु** - पुनः परीक्षा या सत्यापनशीलता वैज्ञानिकता की एक महत्वपूर्ण कसौटी है। तथ्यों के सत्यापन एवं वैज्ञानिक निष्कर्षों की प्राप्ति हेतु वस्तुनिष्ठता अत्यंत आवश्यक है।

5. **निष्पक्ष निष्कर्षों की प्राप्ति हेतु -** सामाजिक अनुसंधान की सार्थकता इसी बात में है की प्राप्त निष्कर्ष निर्भर योग्य हो। किसी अध्ययन या अनुसंधान के माध्यम से प्रमाणिक एवं निष्पक्ष निष्कर्षों की प्राप्ति हेतु प्रारंभ से अंत तक वस्तुनिष्ठता को बनाए रखना आवश्यक है।

6. वास्तविक ज्ञान की वृद्धि हेतु – अज्ञानता रूपी अंधकार को दूर करना विज्ञान का प्रमुख काम है। वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण अपनाकर सामाजिक घटनाओं के संबंध में अधिक से अधिक मात्रा में यथार्थ जानकारी प्राप्त की जाए।

7. अनुसंधान के नए क्षेत्रों का पता लगाने हेतु - सामाजिक घटनाओं या समस्याओं के संबंध में नवीन पक्षों की जानकारी अनुसंधान के नए क्षेत्रों को विकसित करने में योग देती है। भविष्य में अध्ययनकर्ता इन नवीन अक्षरों को लेकर अनुसंधान की नयी योजनाएं बना सकता है। यह उसी समय संभव है जब अध्ययन पूर्णतः वस्तुनिष्ठ हो।

8. अनुसंधानकर्ता पर नियंत्रण बनाये रखने हेतु – वैज्ञानिकता ही अध्ययनकर्ता पर नियंत्रण रखकर उसे वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण अपनाकर अध्ययन कार्य करने के लिए प्रेरित कर सकती है। वस्तुनिष्ठता के आधार पर ही वह सत्य का पता लगा सकता और वैज्ञानिक निष्कर्ष प्राप्त कर सकता है।

9. भ्रांतियों की समाप्ति हेतु – वैज्ञानिक अध्ययनों के आधार पर प्राप्त निष्कर्षों की सहायता से ही भ्रांत धारणाओं को दूर किया जा सकता है।

10. सामाजिक समस्याओं के समाधान हेतु - आधुनिक जटिल समाजों में अनेक सामाजिक समस्याएं व्याप्त है। विभिन्न प्रकार की समस्याओं की यथार्थ जानकारी वैज्ञानिक अध्ययनों की सहायता से ही प्राप्त हो सकती है।

वस्तुनिष्ठता प्राप्त करने के साधन एवं विधियां

1. पारिभाषिक शब्दों एवं अवधारणाओं का मानकीकरण
2. दैव निदर्शन के उपयोग को प्रधानता
3. क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं पर कम से कम निर्भरता
4. प्रश्नावली व अनुसूची का प्रयोग
5. यांत्रिक साधनों का प्रयोग
6. प्रयोगात्मक पद्धति का उपयोग
7. सांख्यिकीय अनुमापो का प्रयोग
8. समूह अनुसंधान पद्धति का प्रयोग
9. अंतर वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग
10. मिश्रित सांस्कृतिक उपागम का उपयोग

निष्कर्ष - सामाजिक घटनाओं से संबंधित अध्ययनों में वस्तुनिष्ठता बनाए रखना काफी कठिन है। परंतु इसका यह तात्पर्य नहीं है कि वस्तुनिष्ठता प्राप्त करना असंभव है। इसके लिए सर्वाधिक आवश्यक यह है कि अनुसंधानकर्ता स्वयं पर नियंत्रण रखें अपने को पूर्वाग्रहों से मुक्त रखें और वैज्ञानिक दृष्टिकोण सर्वत्र बनाए रखें। आज अनुभव व अनुसंधान के आधार पर ऐसी विधियां व साधनों का विकास हो चुका है जो सामाजिक घटनाओं के अध्ययन में वस्तुनिष्ठता प्राप्त करने में योग देते हैं।